# श्री श्याम नित्य ज्योत पाठ

श्याम ज्योत मंगल सुखकारी। जय जय बाबा श्याम बिहारी।
श्री श्याम मंगल सुखदायक। प्रतिफल रहते श्याम सहायक।
अमर कथा खाटू वाले की। पाण्डव भीमसेन लाले की।
कहिये कृष्णं रूप निरंजन। भक्त वत्सलं रिपुदल भंजन।
करुणा सिन्धु कृपानिधान। अनुपम रूप गुणों की खान।
सर्व शुभम् सारे जग काजा। जय–जय खाटू के महाराजा।।
बाबा श्याम भक्त मन भावन। मंगलज्योत है दिव्य सुहावन।।
जन मन रंजन शक्ति स्वरूपा। कलिमल हरन सुखद शुभरूपा।।
तेजोमय श्री श्याम बाबा। सकल जगत में निर्मल आभा।।
महाभारत युग था अलबेला। महापुरुषों का लगा था मेला।।
उस युग में थे कृष्ण मुरारी। पूर्ण कलाधर युग अवतारी।।
हस्तिनापुर थी बड़ रजधानी। महाभारत में कथा बखानी।

श्याम ज्योत मंगल सुखकारी। जय जय बाबा श्याम बिहारी।
भीम ने दो दो ब्याह रचाये। अहिलवती व हिडिम्बा पाये।
नाग लोक की राजदुलारी। भीम की पहली पत्नी प्यारी।
वाशक लागलोक मे रहते। अहिलवती के पिता कहाते।
थे पाताल लोक के राजा। आज्ञा माने सर्प समाजा।
एक मनोहर था उद्यान। कोयल पक्षी करते गान।
हरियाली चहुं दिशि–दर्शाऐं। सखियां सब मिल धूम मचाएं।
सुन्दर बदन सुशोभित काया। अहिलवती का तेज सवाया।
शिव की भक्ति पूजा करती। ध्यान शिवालय में जा धरती।
नियम, निभावे नित्य हमेश। पूजे गिरजा और महेश।
शिव मंदिर है बीच बाग में। ऐलवती शिव के अनुराग में।
निज निज गृह सब सखियां जाये। शिव अनुरागिनि रागिनी गायें।

श्याम ज्योत मंगल सुखकारी। जय जय बाबा श्याम बिहारी।
बासुक बोले निज स्वामी से । भोले शिव अंतर्यामी से ।
बेटी मेरी लाड दुलारी। अहिलवती की वाणी प्यारी।
हो प्रसन्न जगदम्ब भवानी। मुझको बेटी दी कल्यानी।
हम भी देते आशीर्वाद। शिव शंकर का गूंजा नाद।
कालान्तर में ऐसा होगा। उसके ऐसा बेटा होगा।
होगी वो एक अमर निशानी। महावीर महा बलिदानी।
अहिलवती बेटी का लाला। हो भविष्य में खाटूवाला।
श्याम ज्योत मंगल सुखकारी। जय जय बाबा श्याम बिहारी।

पिता पुत्री दोऊ तप करते। तप से ताप अनेकों टरते।
दोनों ने जब आंखें खोलीं। पुत्री पिताश्री से बोली।
शिव के पास आप जाते हो। क्यों नहीं मुझको ले जाते हो।
मेरा मन भी संग जाने का। शिवशक्ति दर्शन पाने का।
वहीं रहंगी शिवचरणों में। जाना नहीं अन्य वरणों में।
शुभ इच्छा बेटी की जानी। नागराज ने बोली वाणी।
शिव गिरिजा को यहीं बुला लो। दर्शन का तुम लाभ उठा लो।
मेरी ममता हृदय दुलारी। तुझे निहारूं सांझ सकारी।
श्याम ज्योत मंगल सुखकारी। जय जय बाबा श्याम बिहारी।
अहिलवती नित शंकर पूजे। और देव नहीं जाने दूजे।
जल से कलश भरे नित नेमा। ताजा सुमन चढ़ाये सप्रेमा।
आंधी आई बाग उजड़ गए। फूल सभी पौधों के झड़ गए।
बिखरे पुष्प धरण पर सारे। अंबर से ज्यों टूटे तारे।
सूर्य उगा जब हुआ सवेरा। अहिलवती को था सब बेरा।
ताजा पुष्प कहां से लाऊँ। शिव पूजन को कैसे जाऊँ।
गिरे फूल धरती से ठाये। वही पुष्प शिवलिंग चढ़ाये।
शिव पूजन को मान लिया है। होनी को पहचान लिया है।

श्याम ज्योत मंगल सुखकारी। जय जय बाबा श्याम बिहारी।
बाशक धीरज देके बोला। अमृत कुण्ड का पहरा खोला।
बेटी तुम मतना घबराओ। अमृत पीवो मौज मनावो।
अमृत पान किया लाली ने। चिन्ता खोई खुशहाली ने।
माता को अवगत करवाई। जननी ने भी धीर बंधाई।
श्राप नहीं तुझको वर दीन्हा। उज्ज्वल भविष्य तेरा कीन्हा।

श्री श्याम नित्य ज्योत पाठ
द्वितीय स्कंध

श्याम ज्योत मंगल सुखकारी। जय जय बाबा श्याम बिहारी।
कैसे भीम गये पाताला। वो वृतांत बतलाऊँ आला।
एक बार द्वापर युग माही। वीर तपस्या की मनचाही।
जरासंघ कीचक दुर्योधन। भीम संग तप किये चतुरजन।
कठिन तपस्याएं वीरों की। हुई पूर्ण चारों सूरों की।
हो प्रसन्न ब्रह्मा वर दीन्हा। जो चाहा वैसा कर दीन्हा।
श्याम ज्योत मंगल सुखकारी। जय जय बाबा श्याम बिहारी।
इच्छित वर पाये तपधारी। निज गृह की सब सुरत बिचारी।
कीन्ह पयाना अति हर्षाये। मार्ग में विचार मन आये।
हम चारों चलते हैं साथ। मृत्यु हमारी किसके हाथ।

कहे भीम से तीनों बात। ब्रह्माजी से कर लें ज्ञात।
भीम कहे तुम तीनों जावो। निज मृत्यु का पता लगाओ।
करूं प्रतिक्षा इसी जगह पर। तुम्ही आवो पता लगाकर।

श्याम ज्योत मंगल सुखकारी। जय जय बाबा श्याम बिहारी।
ब्रह्माजी यूं बोले वाणी। जो आया नहीं चौथा प्राणी।
उसके हाथों अंत तुम्हारा। ब्रह्मा भेद बताया सारा।
मृत्यु का भय लेकर आये। भीम के तीनों सन्मुख आये।
बात भीम को नहीं बताई। तीनों ने योजना बनाई।
जहर हलाहल मिला दिया है। भोज खीर का बना लिया है।
पाण्डव भीम कुदिया निमंत्रण। स्वीकारा उनने आमंत्रण।
जहर युक्त भोजन करवाया। वीर भीम ने होश गंवाया।
बांध भीम को जल में डाला। मृत प्राय पहुंचा पाताला।

श्याम ज्योत मंगल सुखकारी। जय जय बाबा श्याम बिहारी।
देह भीम की लगती ऐसे। सोवत सिंह नींद में जैसे।
हर्ष विषाद है अहिलवती को। होनेवाले देख पति को।
सोचा ये सुहाग है मेरा। इनके संग लेऊंगी फेरा।
बोली मेरा पति यही है। इनको वरणूं मति यही है।
ऐसा कहकर मूर्छित हो गयी। सिंह समीप सिंहनी सो गयी।
अहिगन दौड़–दौड़ के आये। बासक राजा को संग लाये।
बाशक दृश्य देख घबराये। बेटी के सिर हाथ फिराये।
चेत कराया अहिलवती को। पियुष पिलाया जड़वत पति को।

श्याम ज्योत मंगल सुखकारी। जय जय बाबा श्याम बिहारी।
चित्त में चेतन ज्योत जगी है। जहर लहर ठंडी पड़गी है।
भीम कहे मैं कहां आ गया। कैसे सबके चित्त छा गया।

अहिलवती बतियावे पिव से। कथा सुनत है गौरा शिव से।
अहिलवती यूं बोली वाणी। नाग लोक में तुम ही हो प्राणी।
नागलोक के ये हैं शासक। मेरे पिता नाम है बाशक।
तुम भी अपना नाम बताओ। परिजन का परिचय बतलाओ।
कौन वरण का धर्म निभावो। हम सबका संदेह मिटावो। ऐसे कैसे जल में न्हावो। घटना से वाफिक करवाओ।
श्याम ज्योत मंगल सुखकारी। जय जय बाबा श्याम बिहारी।
भीम नाम रखा माता ने। नहीं विदाई दी आता ने।
बेती सब घटना बतलाई। एहि विधि नाग लोक में आई।

अम्बे की वाणी से भीम को। अवगत सभी कराए भीम को। तुम हमरी बिटिया के पति हो। तुमरी पत्नी अहिलावती हो।
ऐसा सपना मात दिखाया। किरपा से तुम्हें स्वस्थ बनाया। भीम कहे मोहे भूख लगी है। फिर से सोयी हुई जगी है।
भीमसेन का हाथ पकड़ कर। अहिला ले गयी अमृत कुंड पर।
जी भरकर के अमृत पीवौ। उमर हजारी निर्भय जीवो।
नाग लोक में अमृत पान। किया भीम ने रुचि अनुमान।

श्याम ज्योत मंगल सुखकारी। जय जय बाबा श्याम बिहारी।
कन्या दान का अवसर दे दो। माँग लाडली की तुम भर दो। तत्पश्चात् स्वदेश पधारो। अैलवती का संग विचारों । अैलवती भी करे निवेदन। तव चरणों में जीवन अर्पण।
आप गये तो प्राण जाएंगे। नहीं लौटके वो आएंगे।
नागलोक सब टेर लगाई। स्वीकारो हमरी शिवकाई।

इनको अब क्या उत्तर देवूं। मां की आज्ञा कैसे लेवूं।
इतने में नारद मुनि आये। नारायण–नारायण गाये।
भीम सहित सब किया प्रणाम। आशीर्वाद दिया मुनिराम।
असमंजसमा भीम जताई। नारद संशय दिया हटाई।
अन्तर की आवाज पिछाणी। नारद जी ने बोली वाणी।
निज विवके कहता है मेरा। उचित नहीं अब जाना तेरा।
श्याम ज्योत मंगल सुखकारी। जय जय बाबा श्याम बिहारी।
भीम बली को ज्ञान हो गया। स्व दायित्व का भान हो गया।
सब के एक मनोरथ चिन्हे। भीम स्वीकृति उनको दीन्हे।
भीम खुशी के शब्द उचारे। सबको वहां लगे अति प्यारे।
बाशक ने आदेश दिया है। कार्य सभी को बांट दिया है।
नागलोक में हर्ष अपारा। मंगलगीत करे गुंजारा।
सावो हाथ लियो अहिराई। तेल बान की रश्म निभाई।
हल्द हाथ होवे प्रांगण में। चौक पुराया है आंगन में।
तेल बान की रश्म कर मामो लीन्ही गोद।
बनड़ी नै बैठा दई, सखियां के मन मोद।। 11।।
सखी सजावे सज रही, अहिलवती हरसाय।
बनड़ी गावै साथियां, सुगणा साज सजाय।।12।।

श्याम ज्योत मंगल सुखकारी। जय जय बाबा श्याम बिहारी।
अहिलवती की देह निखरगी। रूप छटा चहुं और बिखरगी।
नारद मुनि भीम बतलाये। दूल्हा और बारात सजाये।
वर का पक्ष संभाले नारद। गीत रिवाजी गायें शारद।
सज धज के बरात जब आई। नागलोक में खुशियां छाई।

पोशाकें सब नई पहनकर। आये बराती सारे सजकर।
दूल्हे को घोड़ी बैठाए। शेष नाग के द्वारे आये।
खड़ग हाथ ले तोरण मारा। सासू शुभ आरता उतारा।
शहनाई का सुर जब छाया। मंगल गीत लुगायां गाया।

तोरण
तोरण आया राइवर थर–थर कांप्या राज।
पूछो थे अहलवती न कामण कूंण करया छराज।
म्हे कांई जाणा म्हारा जोशी कामण गारा राज
जोश्यां रो नेग चुकास्यां कामण ढ़ीला छोड़ो राज।
म्हें कांई जाणां म्हारा नाई कामण गारा राज।
नाया रो नेग चुकास्यां कामण ढीला छोड़ो राज।

कामण
बनो कांकड़ आय बिराज्यो जी रस कामणिया।
बनो तोरण आय बिराज्यो जी रस कामणिया। बनो फेरा आय बिराज्यो जी रस कामणिया।
बनो थापां आय बिराज्यो जी रस कामणिया।
बनो महलां आय बिराज्यो जी रस कामणिया।
अहिलवती निज मन में हरसी। लीन्हीं वर माला सुन्दर सी।
वर को वरमाला पहनाई। सखि सहेल्यां भी हरसाई।
बजे ढोल बाजी शहनाई। वर, वधु को माला पहनाई।
नारद वीणा मधुर बजाये। नभ से देव सुमन बरसाये।
गोरी गणपति देव मनाया। दोनों को मंडप बैठाया।
नागलोक की रीत निभाई। मुनि नारद पूजा करवाई।
कन्यादान दिया सब भारी। फेरा देखे नगरी सारी।
मधुरी भेर दुंदुभी बाजी। अहिला बायें अंग बिराजी।
मांग भरी है दूल्हो राजा। गठजोड़े की रंगत ताजा।
सगरी कुल की रीत निभाई। देवा सन्मुख श्लोक सुनाई।

श्याम ज्योत मंगल सुखकारी। जय जय बाबा श्याम बिहारी।
भीम अहिला महल पधारे। भांति–भांति के भोग बिचारे।
नरदजी भी लेत विदाई। भीम कूं अगम राह बतलाई।
सबको आशीर्वाद दिया है। हस्तिनापुर का मार्ग लिया है।
मधुरी वीणा मुनी बजाये। नारायण–नारायण गाये।

श्याम ज्योत मंगल सुखकारी। जय जय बाबा श्याम बिहारी।
हारे का वो बने सहारा। स्वयं कृष्ण ने वचन उचारा।

हस्तिनापुर में अब तुम जाओ। कुंती भूवा को समझाओ।
हो गये अंर्तध्यान कन्हाई। नारद ने वीणा झनकाई।
नाग लोक के वर्तमान में। खुशियां छांई प्राण—प्राण में।
प्रफुलित रहते भीम अहेला। बदल रहा कुदरत का खेला।
मृत्यु लोक में हम जाएंगे। कुदरती पुरस्कार पायेंगे।
भीम अहिला दोनों साथ। प्रभु प्रेरित मन कर ली बात।
बाशक जी को दिया बताई। हम दोनों को देवो बिदाई।
श्याम ज्योत मंगल सुखकारी। जय जय बाबा श्याम बिहारी।
भीम अहिला मनोयोग से। बिदा हुए पाताल लोक से।
संग में सेवक वीर जवान। कदम कदम पर रखे ध्यान।
नारद जो स्थान बताये। पंचवटी के पास वे आये।
जहां शिवालय दिया दिखाई। वरणी न जाय मनोहरताई।
भीम अहिला वहां पधारे। डेरा डाला नदी किनारे।
शिव की पूजा भक्ति करते। अनहोनी से वे नहीं डरते।
नव दम्पत्ति दोऊ बतियाये। सुखद रात्रि बीती जाए।
इतने में एक निशिचरि आई। दोनों को खाने वो धाई।
बोली तुम हो भोजन मेरा। भीम उत्तेजित हुआ घनेरा।
मर्यादा में रहना हमको। अहिल बतावे धर्म भीम को।
श्याम ज्योत मंगल सुखकारी। जय जय बाबा श्याम बिहारी। प्रातः काल उठे दोऊ प्रेमी। शिव भक्ति पूजा के नेमी। मनः भीम के हुवा विचार। आया याद सुहृय परिवार।
भीम अहिला से यूं बोला। हस्तिनापुर में मन है डोला।
थ्फरि आऊंगा तुम्हारे पासा। मन में रखो पूरी आशा।
श्याम ज्योत मंगल सुखकारी। जय जय बाबा श्याम बिहारी।
भीम कहे वो अंश हमारा। दोनों की आंखों का तारा।
जग में वो सर नाम करेगा। कई अलौकिक काम करेगा।
इतना कहा चला बलधारी। हस्तिनापुर की राह निहारी।
भीम गवन कीन्हो निज देशा। राक्षस बना भीम के जैसा।
वही राक्षसी संग में आई। अहिलवती से मात जो खाई।
छुआ शिवालय में वो जाई। अहिला शिव पूजन को आई।

श्री श्याम नित्य ज्योत पाठ
तृतीय स्कंध

श्याम ज्योत मंगल सुखकारी। जय जय बाबा श्याम बिहारी।
पंचवटी पाण्डव को प्यारी। पाण्डु गुफा वहां है न्यारी।
शिव पूजा भक्ति में लीन। अहिला पतिव्रत धर्म प्रवीन।
जहां अहिला करे निवासा। तह अनुकुल प्रकृति आभासा।

शीतल मंद बयार चलत है। दशों दिशाएं नृत्य करत हैं।
अवनि माता भी मुस्काए। दानी वीर धरा पे आए।
भरे सरोवर निर्मल जल से। वृक्ष सज रहे मीठे फल से।
वन उपवन में भी हरियाली। अहिल लोक में शुभम् दिवाली।
श्याम ज्योत मंगल सुखकारी। जय–जय बाबा श्याम बिहारी।
कार्तिक शुक्ल पक्ष अति पावन। एकादशी भक्त मन भावन।
दिव्य तेज प्रगटा अति सुन्दर। श्याम रूप में श्री श्याम सुन्दर।
नाग लोक में सेवक आया। शेष कूं शुभ समचार सुनाया। समाचार सुन बाशुक आये।
मनोवेग से नारद आये।
संत पिता को किया प्रणाम। पति को याद किया सुखधाम। बालक देख दोऊ हरसाये।
नारद छंद मधुर स्वर गाये।
श्याम ज्योत मंगल सुखकारी। जय जय बाबा श्याम बिहारी।
आपस में सब कही बधाई। भक्त जनन सब गाई बधाई।
बाल रूप में वो बलवान। लगता जैसे भीम महान।
घुंघराले हैं बाल सरीक। मुनि मुख उचरे नांव बर्बरीक। गुण अरू कर्म बतावे नारद।
जिनके कंठ विराजे शारद।
श्याम ज्योत मंगल सुखकारी। जय जय बाबा श्याम बिहारी।
सबने सादर शीश नवाया। नारद आशीर्वाद सुनाया।
सबा के शुभ अरमान हो गये। नारद अन्तर्ध्यान हो गये।
ऐकी भाव हुआ जब सब में। अमर फूल बरसाये नभ में।
नभ से देव सुमन बरसाये। बर्बरीक मन में हरसाये।
बाशुक ने भी कर प्रस्थान। पहुंचे अपने निज स्थान।
अहिला बर्बरीक सुखपावै। ममता को वात्सल्य लुभावै।
सिंहनाद लाला ने सुनकर। बोला मां को चरण नमन कर।
ये आवाज कहां से आई। माता सिंह कि बात बताई।
श्याम ज्योत मंगल सुखकारी। जय जय बाबा श्याम बिहारी।
पकड़ सिंह पर हुआ सवार। अहिलवती ने समझा सार।
दौड़ सिंहनी भी आई है। सूरत लाल की मन भाई है।
खेल खेलते समय बीतगा। बर्बरीक सब खेल जीतगा।
दोनों निज कुटिया में आये। माता लाला को समझाए।
शिव की भक्ति सबसे ऊँची। सब तालों की एक ही कूंची।
शिव पूजन में ध्यान लगाते। पंचामृत से स्नान कराते।
केशर चंदन पुष्प चढ़ाए। बेलपत्र शिव के मन भाये।
जेहि विधि पूजन मात करत है। तेहि विधि पूजा लाल करत है। करें आरती शिव शिव
गाये। भांग धतुरे का भोग लगाए।
श्याम ज्योत मंगल सुखकारी। जय जय बाबा श्याम बिहारी।
लाला बैठा ध्यान लगाकर। शिव चरणों में चित्त लगाकर।

भाव शरीर प्रवेश हो गया। योगीराज हृदेश हो गया। शिव दरबार में पहुंच गया है। जो देखे सर्वस्व नया है।
पर्वती माता को देखा। गोदी में गणपति को देखा।
टहिलवती मन मांहि विचारी। लाला की आरती उतारी।
आभा में सब देव निहारी। वाणी धन्य धन्य उचारी।
ध्यान समाधि से जब छूटा। मां को बोला वचन अनूठा।
श्याम ज्योत मंगल सुखकारी। जय जय बाबा श्याम बिहारी।
माता समझ गयी वो वाणी। भोला शंकर की है कहानी।
अपना उनका गहरा नाता। बर्बरीक से बोली माता।
उनके नाम अनेकों लाला। खास नाम शंकर मतवाला।
वो ही अपना ईष्टदेव है। सब देवों में महादेव है।
उनका ध्यान लगाते रहना। शिव दर्शन देंगे ये कहना।
बैठ कलेवा तुम्हें कराऊँ। वीर धर्म तुमको समझाऊँ। निर्बल को तुम सबल बनाना। बेटा मानव धर्म निभाना।
समझत समझाते बन आये। सिंह एक घबराता जाये।
श्याम ज्योत मंगल सुखकारी। जय जय बाबा श्याम बिहारी।
देख शिकारी बाण चलाये। बर्बरीक सब तोड़ बगाये।
मुठिका एक वीर ने मारी। स्वर्गवास हो गया शिकारी। तीर कमान लिया लाला ने। मां का ध्यान किया लाला ने।
बर्बरीक के सन्मुख आई। मृत शिकारी देख गुसाई।
कुपित हुई माता यूं बोली। धर्म तराजू सुरता तोली।

चरण पकड़ कर शीश नवाई। मां से भूल क्षमा करवाई।
क्षत्री धर्म बतावे बन में। हर्षित हो माता निज मन में।
दुर्बल को नहीं कभी सताना। ये ही क्षत्री धर्म का बाना। करे याचना तुमसे कोई। दे दो वो मांगे जो सोई।
निज विवके का आदर करना। धर्म शास्त्र आज्ञा में रहना।
निर्बल की मैं करूं सहाई। याचक को दूं मान बड़ाई। जैसा कहू करूं मैं वैसा।
आशीर्वाद मुझे दो ऐसा।

श्याम ज्योत मंगल सुखकारी। जय जय बाबा श्याम बिहारी।
क्षत्री धर्म की शिक्षा देवे। आरोगा वे मिसरी मेवे।
धनुष बाण के लिए प्रार्थना। अग्नि देव की करी अर्चना।
अहिलवती कि विनती सुनकर। अग्नि देव प्रकट हुए वहां पर।
हाथ जोड़कर किया निवेदन। लाला को पिनाक दो भगवन।
अनलदेव सब समझ लिया है। बर्बरीक को धनुष दिया है।

जब तक धरती आसमान है। इस धनुष का सुसम्मान है।

इसके बाण बड़े बलकारी। रखते हैं भोले भण्डारी।
हेतु अभ्यास बाण मैं दीना। समर्थ बाण शिवजी से लीना।

श्याम ज्योत मंगल सुखकारी। जय जय बाबा श्याम बिहारी।
नाग लोक की सुरत विचारी। वीर बर्बरीक की महतारी।
लाला को अमृत पाना है। मुझको भी पीहर जाना है।
मनोयोग से दोनों प्रानी। पहुंचे हैं जहां नाना नानी।
नागलोक में दोनों आये।नाग–नागिनी सब हर्षाये।
युगल हृदय से किया प्रणाम। आशीर्वाद दिया शुभकाम।
चित्त प्रशन्न हुआ जलपान। शिव मंदिर का आया ध्यान।
अम्बे मां को याद किया है। मिली सहेल्या मगन हिया है।
सब मिल अमृत कुण्ड पर आये। लाला को पियूष पिलाये।
अपने अपने स्थान पधारे। शिव की जय जयकार उचारें।
गंगाजल से कलश भरावे। शिव शंकर की आरती गावे।

अहिला वन अवलोकन जावै। बर्बरीक को संग ले जावै।
पाठ पढाये धर्म कर्म का। बोध करावे क्षत्री धर्म का।
धनुषबाण सिखलाया हर्षित। समर क्रिया में किया पारंगत।
जननी जो जो शिक्षा दीन्ही। बर्बरीक सब सिर धर लीन्ही।
श्याम ज्योत मंगल सुखकारी। जय जय बाबा श्याम बिहारी।
सही निशाने तीर लगाया। देख मात का हिय हरसाया। वहां गुफा में रहते निशिचर।
दौड़े आये सभी भयंकर।
क्या आदेश कहे यूं लालो। माता बोली धनुष संभालो।
पुनःलाल ने छोड़ा बान। बर्बरीक महा बलवान।
दानव दल उमड़ा रिसियानी। अहिलवती भी कुपित हुयायी।
सिंह नाद ज्यूं गरजी वन में। दहशत हुई निशाचर गन में।
प्राण बचाकर भागे सारे। अहिलवती उनको ललकारे।
धरि धीरज लालासन आई। बोली काहे तीर चलाई।

सावधान रहने को बोला। फिर काहे आज्ञा से डोला।
प्रथम वार दुश्मन का झेलो। रणभूमि पे फिर तुम खेलो। नियम निभाओ वीर धर्म का।
साक्षी हो इतिहास कर्म का। चरण गहि बोला कर जोरी। क्षमा करो मां गलती मोरी।
ऐसी भूल न करूं दुबारा। सदा रहूंगा मां तेरा प्यारा।
ममतामयी मां का मन झूमां लाला के ललाट को चूमा।
ममताभरा हाथ सिर रखकर। शिव मंदिर आये दोउ चलकर।
उमा पति को शीश नवाया। पूजा कीन्ही भोग लगाया।
दोनों मिल परसादी पावे। लाल पे मां बलिहारी जावे।
अहिलवती जो वीर पछारे। निज मुखिया को जाय पुकारे।

कोशासुर सब उसको कहते। हुकुमत में सब राक्षस रहते।
विगत बात समझाई दानव। हमको हार मनाई मानव।
श्याम ज्योत मंगल सुखकारी। जय जय बाबा श्याम बिहारी।
मां बेटे दोऊ बातें करते। सेवक गण पहरे पर रहते।
सभी वहां मेवा फल खाते। प्रकृति से पौरुष बल पाते। अग्नि देवता का था कहना।
असल बाण शिवजी से लेना। बाण हेतु शिवपूजन करते। पुरुषार्थ से वो नहीं डरते।
गणपति, पार्वती, नंदीश्वर। वीरभद्र, कार्तिक, पूजन कर।
पूजे शिव षोडस उपचारउ। ऊँ शिव ऊँ शिव बदन उच्चारउ।
बिजिया बिल्व पत्र चढ़ावै। शिव शंकर का ध्यान लगावे।
अदि देव ये शिव त्रिपुरारी। भोले की महिमा अतिभारी।
बर्बरीक शिव पूजा कीन्ही। ह्रदय शिव छवि धारण कीन्ही।
श्याम ज्योत मंगल सुखकारी। जय जय बाबा श्याम बिहारी।
अहिलवती फरियादी लगाई। पार्वती के ध्यान में आई।
मुझको करे पुकार अहेला। क्या विपदा आई इस बेला।
पर्वती मन करे विचारा। पल में पलटा खूब नजारा।
भोलानाथ नजर नहीं आये। मनहु विचार भवानी लाये।
मां बेटा जहां करे तपस्या। पूनम हो वहां कि अमावस्या।
डमडमडमडम डमरू बाजा। प्रगटे हैं कैलाश के राजा।
ध्यान मगन हैं दोनों प्राणी। श्री मुख से शिव बोले वाणी। अहिलवती के लाल दुलारे ।
आँख खोल आँखों के तारे।
उठो अहेला शिवजी बोले। मां बेटे दोऊ पलकें खोल।
श्याम ज्योत मंगल सुखकारी। जय जय बाबा श्याम बिहारी।
वीर तुम्हे ये वचन निभाना। जो हारे उस पक्ष में जाना।
निराधार के बनो सहारे। सदाचार के भी तुम प्यारे।
असहाय की तुम्हें सहायी। करनी है ये वचन दृड़ायी।
बात अहिल के समझ न आये। बर्बरीक शिव जो बतलाये।
जब तक सूरज चांद रहेंगे। अनुयायी तब शरण गहेंगे। शिव के चरण सरोज निहारे।
भाव युक्त जल चरण पखारे।
श्याम ज्योत मंगल सुखकारी। जय जय बाबा श्याम बिहारी।
अन्तर्ध्यान हुए कैलाशी। शिवशंकर है मंगलराशि।
पहुंचे निज स्थान सदाशिव। हमरी मां पार्वती के पिव।
कहां गये थे अंतर्यामी। मेरे जन्म जन्म के स्वामी।
पार्वती ने किया सवाल। आज किये हो किसे निहाल।
शिव भोले ने बात उचारी। अहिला का बेटा तपधारी।

तपकर धनुष अग्नि से लीन्हा। तीन बाण मैं खुश हो दीन्हा।
समाचार बाशक मन भाये। बेटी के सुख से सुख पाये।
श्याम ज्योत मंगल सुखकारी। जय जय बाबा श्याम बिहारी।

तीन बाण तरकश में सोहे। बर्बरीक सबका मन मोहे। बाणों की है शक्ति निराली। लाला हुआ अधिक बलशाली। मां–बेटे दोउ वन में बिचरें। महाकाल से वो नहीं डरें। तभी वहां खड़गासुर आया। कोशासुर का पुत्र कहाया। कई सहस्र सेना संग लाया। मतवाला मद में भरमाया। मां–बेटे के कछुक सिपायी।
फौज ने बंदी लिये बनायी।
सैनिक एक दौड़ के आया। जो देखा सो हाल सुनाया।
अैलवती को उपजा क्रोधा। बोली बर्बरीक सुन योद्धा।
श्याम ज्योत मंगल सुखकारी। जय जय बाबा श्याम बिहारी।
लाला बाण ताण कर मारा। नष्ट हुआ शत्रु दल सारा।
क्रोधित हो खड़गासुर बोला। किसका मन मरने को डोला।
तीर वीर अर्जुन के जैसा। किसने बाण चलाया ऐसा।
उसे मौत के घाट उतारूं। मैं विकराल वीर झुंझारू।
बोला बर्बरीक यूं वाणी। बातों में नहीं आणी जाणी।
कहने और करने में अंतर। खत्म करों फिर बोलो मंतर।
राक्षस ने तलवार चलाई। लाला जाणे रण चतुराई।
बर्बरीक फिर बाण चलाया। खड़गसुर को स्वर्ग पहुंचाया।
श्याम ज्योत मंगल सुखकारी। जय जय बाबा श्याम बिहारी।
मां बेटे दोऊ सुख पावे। पूरा क्षत्री धर्म निभावे।
बन समीप रहता एक बंदा। गाय चराना उसका धंदा।
अहिलवती को आके बोला। भेद दैत्य के भय का खोला।
गाय चराने का मन मेरा। हुकुम आपका करूं बसेरा।
हम तो क्षत्रीय धर्म निभाते। गऊ ब्राह्मण की सेवा करते।
अहिलवती की आज्ञा पाकर। गाय चरावे फत्ता गूजर।
धेनू दुग्ध पियुष कहलावे। शिवशंकर के भोग लगावे।

श्याम ज्योत मंगल सुखकारी। जय जय बाबा श्याम बिहारी।
एक बार डाकू वहां आकर। फत्ता गूजर को धमकाकर।
ले गये सारी गाय चुराकर। फत्ता कहि अहिल को आकर।
मां बेटे दोऊ पूजन कर। गूजर की सब बात समझकर। बर्बरीक को हुकुम सुनाया। मां ने सच्चा ज्ञान बताया।रक्षा करो गाय ग्वाले की। शान निभावो रखवाले की। सुनकर जननी का आदेश। पहुंचा वीर डाकू के देश। बालक देख भील हर साये। अपने अपने तीर चलाये।
लाला सबका उत्तर दीन्हा। तीर तोड़ धरती धर लीन्हा।
अपना बाण ताणकर मारा। डाकू भीलों को संहारा।
श्याम ज्योत मंगल सुखकारी। जय जय बाबा श्याम बिहारी।
अपनी अपनी गायें पाई। ग्वालों के मन खुशियां छाई।
हरित ऋषि एक मुनि अलबेले। संग बहु आज्ञाकारी चेले।
शिवमंदिर कि पास आ गये। वहां सभी विश्राम पा गये।

यज्ञ करने की सबने ठानी। इतने में आयी क्षत्राणी।
करि प्रणाम परिचय बतलाया। लाला को आसीस दिलाया।
सेवा की आज्ञा हो कोई। फरमावो पूरी हो सोई।
लाला और माता को देखा। संत सुनाए यज्ञ का लेखा।

श्याम ज्योत मंगल सुखकारी। जय जय बाबा श्याम बिहारी।
सजे वितान यज्ञ के भारी। कर लीन्ही पूरी तैयारी।
वैदिक मंत्र उच्चारे मुनिजन। आहुतियां दे रहे शिष्यगन। धुवां और सुगंध सुहावे। यज्ञ प्राणी के पाप नशावे।
बर्बरीक यज्ञ कि रखवारी। करे चाव से पहरेदारी।
खबर पड़ सोमासुर को जब। फौज सजाकर आया वो तब। यज्ञ विध्वंस करन की ठानी। समझा बर्बरीक बलवानी। निर्भय यज्ञ करो मुनि स्वामी। दानव होंगे यमपुर गामी।

श्याम ज्योत मंगल सुखकारी। जय जय बाबा श्याम बिहारी। बाशक जी भी अमृत लाये। हरित ऋषि को शीश नवाये। नानाजी को किया प्रणाम। अहिला बर्बरीक शुभनाम।
अमृत हरित ऋषि को दीन्हा। मुनि लाले को अर्पन कीन्हा। लाला ने अमृत पी लीन्हा। पुनि आसीसें मुनिवर दीन्हा। बाशक अपने धाम पधारे। शिष्य संग मुनिराज सिधारे। मां–बेटे दोऊ निज स्थान। नित्य करे शिव का गुणगान।

श्याम ज्योत मंगल सुखकारी। जय जय बाबा श्याम बिहारी।
धन्य भाग है नारद देवा। कहो करूं क्या संतन सेवा।
समाचार मैं नूतन लाया। अभी किसी को नहीं बताया। वीरों में तू है बलवान। तुझसे है वीरो की शान। महिमा तीन बाण की बोलो। भेद वीरता का तुम खोलो।
बर्बरीक नारद से बोले। तीन बाण से त्रिभुज डोले। शिव शंकर ने बाण दिये हैं। कोलवचन में बांध लिये हैं। हारे को मैं रण जितवा दूँ।
शिव को दिया वचन मैं साधूं। मातृ भक्त मैं तो कहलावूं।
मां आज्ञा हो प्राण लुटावूं। नित प्रति मां को करूं प्रणाम। मां चरणों में चारों धाम।

श्याम ज्योत मंगल सुखकारी। जय जय बाबा श्याम बिहारी।
पाण्डव कौरव है दो भ्राता। कपट किया कौरव ने ब्राता।
कौरव का पलड़ा अति भारी। पाण्डव के संग कृष्ण मुरारी।
दोनों भाई रण का डंका। बजा दिया अब है नहीं शंका।
सात दिनों के बाद लड़ाई। लड़ेंगे दोनों भाई–भाई। ऐसा युद्ध हुआ नहीं होना। चर्चा है रही कोना कोना। नारद ने सब कथा सुनाई। बर्बरीक को सहज सुहाई। रण में जाना धर्म हमारा। हारे का मैं बनूं सहारा।

श्याम ज्योत मंगल सुखकारी। जय जय बाबा श्याम बिहारी।

बर्बरीक माताढिग आया। रण जाने का मत्ता बताया। देखूं युद्धभूमि में जाई।
मां तुझसे मैं शिक्षा पाई। करूं प्रणाम मात क्षत्राणी। आशीर्वाद देवो कल्याणी।

श्याम ज्योत मंगल सुखकारी। जय जय बाबा श्याम बिहारी।
लाला का उत्साह देखरकर। बोली माता धीर संभलकर।
वीर पुत्र तू है बलराशि। रण देखन के हो अभिलाषी। तुम अवश्य रण में जावोगे।
विलग मात से हो जावोगे।
रोक सकूं नहीं धर्म पुकारे। नीर भरे नैणा रतनारे। राजकुंवार पोशाक उतारो। लाला वीर वेश तुम धारो। अमृत निज हाथों से पावे। केशरिया बागा पहनावे। बांघ टूट गया धीरजता का। आंचल भीग गया माता का।

ठहरो तिलक लगाऊं लाला। पहनाऊं तो हि जय माला।।
हाथा मैं सुवरण थाल लिया। बेटा को मुख निरखै माता। ममता कै कारण है विषाद।
आदर्श देख हरखै माता।।
ममता बोलै मत विदा करै। निज धर्म कहे तूं तिलक लगा।
पृथ्वी का प्राणी–प्राणी में। सत्कर्म भावना त्याग जगा।।
थर थर धुजै है क्षत्राणी। मुस्कावै केशरिया बागा। अहिला ने आयो याद पति। लाला पर पिता प्रेम जागा।।
है रण बांकुरो पिता तेरा। कहियो मां तिलक लगायो है। महाभारत को युद्ध जीतणै नै।
कुंती को पोतो आयो है।।
लेकर गुलाल मां लाला कै। ललाट पर तिलक लगायो है। तूं युद्ध जीतकर आ बेटा।
मां आशीर्वाद सुणायो है।।
थ्दजे हारे ने साथ मात फेर। शिव को पाठ पढायो है। बठे योगेश्वर श्री कृष्ण मिले।
जो सारो खेल रचायो है।।
लाला को कियो आरतो शुभ। अमृत वाणी बोली माता।
नैणा से इकटक देख देख। होई मुख अण बोली माता।।
लला नै शीश झुका करके। माता का चरण स्पर्श किया।
आंखो से शिव का जल लगाय। समर भूमि प्रस्थान किया।।

श्याम ज्योत मंगल सुखकारी। जय जय बाबा श्याम बिहारी।
मग में एक सरोवर आया। बैठ किनारे प्यास बुझाया। एक राक्षसी आई चल कर। बोली रूप रंग के बल पर।
बर्बरीक सन ढोंग रचाया। तुमसा वीर नहीं कोई पाया।
तुम्हे समर्पित पूरा जीवन। कब से भटक रही मैं बनबन।
कर पकड़न चाहा अज्ञानी। मां को याद किया बलवानी।
मस्तक से निकली चिंगारी। वो प्राणों की बाजी हारी। अगम राह लीन्ही बलकारी।
लाला तीन बाण है धारी।

श्याम ज्योत मंगल सुखकारी। जय जय बाबा श्याम बिहारी।
युद्ध करूं रणभूमि जाई। इसमें फर्क नहीं इकराई। रणजीतूंगा एक बाण से। वरणा मस्तक दूं कृपाण से। कैसे बात तिहारी मानूं। करो प्रमाणित तब मैं जानू। देखा सुना नहीं कोई ऐसा। बालक तू मुख बोले जैसा।
कहना मेरा तुम चित्त लावो। फौज साथ ले रण में आवो। बर्बरीक फिर बिड़द बखानी। करो परिक्षण विप्र सुजानी।
अगर परीक्षा में तुम हारे। जाना होगा देश तुम्हारे। इम्तिहान में पास न होऊं। स्वेच्छा से जननी ढिग जाऊ।
अभी परीक्षा हो जायेगी। भ्रमित भावना खो जायेगी।

श्याम ज्योत मंगल सुखकारी। जय जय बाबा श्याम बिहारी।
आज्ञा को मस्तक धर लीन्ही। मन महु मां से बिनती कीन्ही। इतने में छलिया छल कीन्हो। पत्ते पर पदपंकज दीन्हो।
तरकस से एक तीर निकाला। मां को नमन किया तत्काला।
छोड़ा बाण निमिष एक मां ही। पल्लव छेदन करने तांही।
श्याम ज्योत मंगलसुखकारी। जय जय बाबा श्याम बिहारी।
चरण कमल में शीश झुकाया। आशीर्वाद सुहाना पाया।
पूरी हुई परीक्षा तेरी। दूं इनाम में सूरत मेरी। मेरे नाम से पूजा होगी।
पूजेंगे गृहस्थ और योगी। हारे का तुम बनो सहारा। कलियुग में भक्तों का प्यारा।
शिव को करूं प्रणाम वीर मैं। बहुत शक्ति है तीन तीर में। माधव अन्तर्ध्यान हो गये।
केशव में बर्बरीक खो गये। बीच राह में चले अकेला। वो देखन वीरों का मेला।

श्याम ज्योत मंगल सुखकारी। जय जय बाबा श्याम बिहारी।
प्रातःकाल समय शुभ जाना। कुरुक्षेत्र पहुंचा बलवाना। वीरों के तरकश में तीर। जंह देखे वहां वीर ही वीर। नील गगन में शंख गूंजते।
नाद सुनत बह्मांड धूजते। वीर रंग पोशाकें झलके। न्यारे न्यारे ढंग हैं दल के।
रण भेरी स्वर दिये सुनाई। नजर न आये कृष्णकन्हाई। बर्बरीक बूझे मतवाला।
कहां मिलेगा मुरलीवाला। कौरव दल का एक जवान। पाण्डव दल का कहा निशान।
छः वीरों का है दल भारी।
वहां मिलेंगे कृष्ण मुरारी। जिसके रथ की ध्वजा सुरंगी।
ध्वजा बीच में है बजरंगी। उस रथ पे ही है नंद नंदन। है स्वतंत्र नहीं कोई बंधन।

श्याम ज्योत मंगल सुखकारी। जय जय बाबा श्यामा बिहारी।
भीमबली का पुत्र आ गया। तरुणाई का तेज छा गया। समरांगण में मुझे प्रवेश।
देवो हे शिव के हृदयेश। योगेश्वर ने किरपा कीन्ही। युद्ध प्रवेश कि अनुमति दीन्ही।
बर्बरीक नाम बतलाया। मुख्यद्वार से सन्मुख आया। आके सबको शीश नवाया।
आशीर्वाद सभी से पाया। रण प्रांगण में पांचों पाण्डव। से परिचय करवाया माधव। आने का पर्याय बताया।

मैं तो युद्ध देखने आया।
श्याम ज्योत मंगल सुखकारी। जय जय बाबा श्याम बिहारी।
हारे को वे रण जितवावे। मातृ भक्त शिव वचन निभावे। तीन बाण है इनके पास।
शिव के दिये हुए हैं खास। भीम पुत्र ये है बलकारी। नीले घोड़े की है सवारी।
लड़े लड़ाई हार पक्ष से । कोई हटा सके न लक्ष्य से। एक बाण से युद्ध जीतता।
सुन के कौरव दल घबराता। इनको कोई हरा न पाये। कृष्ण सभी को ये समझावे।
सोच विचार करे मन मांही। केशव बर्बरीक के तांही शीश लेन की युक्ति उपाई। माया पति माया फेलाई।

श्याम ज्योत मंगल सुखकारी। जय जय बाबा श्याम बिहारी।
लाला से बोले यदुराई। दिव्य दृष्टि तुमने है पाई। पूरा महा संग्राम निहारो।
निर्णायक बन स्तंभ पधारो। दिव्य ज्योति पधराइ तुझमें।
भेद नहीं अब तुझमें मुझमें। शीश दान की बेला आई। सुर गंधर्व वीर रस गाई।
कर कमलन में शीश लिए प्रभु। वर बहोरी बक्सीश किए विभु।
बिधि अनुकुल कर्म सब कीन्हा। मस्तक को पर्वत धर दीन्हा।
मस्तक ऊंचे शिखर विराजे। बाजा बिगुल तुर्रीया बाजे।
धर्म अधर्म लड़े दोउ भाई। रथ पर बैठे कृष्ण कन्हाई।
युद्ध हो रहा महाभारत का। नीति अनीती सत्य असत का।
महासंग्राम अठारह दिन तक। देखा बर्बरीक का मस्तक।
श्याम ज्योत मंगल सुखकारी। जय जय बाबा श्याम बिहारी।
कृष्ण उन्हें दी विजय बधाई। नत मस्तक हुए पांचो भाई।
कहे युधिष्ठर छवि चित लाई। हमरी विजय आप करवाई।
धर्म राज की बातें सुनकर। बोला भीमसेन अति तन कर।
दुर्योधन को मैंने मारा। कर्ण को अर्जुन ने संहारा।
भीमवीर की सुनकर वाणी। अर्जुन हो रहा पाणी पाणी।
पुनः युधिष्ठर ने फर्माया। कृष्ण ही जाने कृष्ण की माया।
कृष्ण कृष्ण तुम सबने गाया। चमत्कार मेरी गदा दिखाया।
श्याम ज्योत मंगल सुखकारी। जय जय बाबा श्याम बिहारी।
शीश को अमृत से सिंचवाया। करो फेसला हुकुम सुनाया।
शीश हंसा प्रभु आज्ञा पाके। आंखे भी बोली मुस्का के।
शीघ्र सभी का भरम मिटावो। रण बीती सबको बतलावो।
कृष्ण कृपा ने युद्ध दिखाया। रूप चतुर्भुज हृदय समाया।
आंखों से ही नमन किया है। वीरों का मद दमन किया है।
बोले बर्बरीक मुखवाणी। चक्र सुदर्शन की ये कहानी।
विष्णु रूप में दिये दिखाई। चक्र गदा कर लिए कन्हाई।
श्याम ज्योत मंगल सुखकारी। जय जय बाबा श्याम बिहारी।
मुझे दिखाई ऐसी माया। वीर नहीं कोई रण में आया।
पांचों पाण्डव मगन घूमने। रण में चक्र खप्पर झूमते।

बर्बरीक मुख सत्य कहानी। भीम हुआ सुन पानी पानी।
भीम बली मन में पछताये। पांचों पाण्डव शीश झुकाये।
हम सेवक हैं आप हो स्वामी। क्षमा करो है अन्तर्यामी।
अर्जुन को सब भेद बताया। कलियुग से परिचित करवाया।
नरनारी बल हीन रहेंगे। इसी शीश की शरण गहेंगे।
दिव्य ज्योति प्रभु की परछाई। नेत्र शीश के श्याम समाई।
दिव्य ज्योति प्रभू की परछाई। नेत्र शीश के श्याम समाई।
कलियुग में ये करे सहाई। अमर शीश कि ये सकलाई।
ढूंढ लाय अपने भक्तों को। दर्श दिखावे अनुरक्तों को।
हारे को ये देत सहारा। कह दे बाबा श्याम हमारा।
जब जब कलियुग पहरा देगा। मस्तक श्यामरूप प्रगटेगा।
दर्श शीश के जो जन पावे। अपना जीवन सफल बनावे।
जय श्री श्याम श्याम जो गायें। भक्त सभी मेरे मन भायें।
शब्द गूंजते नील गगन में। मगन भये सुर मुनिजन मनमें।
ले बिमान असमान पधारें। शंख ध्वनी जय कार उच्चारे।
पुष्प विमान पुष्प बरसाये। श्याम बिहारी मन मुस्काये।
शुभ वरदान शीश को मेरा। जग में अमर नाम हो तेरा।
नीले घोड़े की असवारी। होगी श्याम तुम्हे ये प्यारी।
कलियुग में अवतार धरोगे। एक भक्त घर तुम जन्मोगे।
सब देवों को साक्षी कीन्हा। लोहागर को बुलवा लीन्हा।
ये मस्तक है प्यारा मुझको। सोप रहा हूं लुहागर तुझको।
इसमें मेरा रूप समाया। दिग्पाली स्थान बताया।
वहां धरो तुम इसको जाकर। खुश होवोगे आसिफ पाकर।
शीश पाले का कहा वृतांत। रूपावती नदी है शांत।
रूपावती की धार बहेगी। शीश दान इतिहास कहेगी।

श्याम ज्योति मंगल सुखकारी। जय जय बाबा श्याम बिहारी।
विधि अनुकुलित पूजन कीन्हा। रूपावती धार धर दीन्हा।
प्रगटे श्याम देव अवतारी। लोहागर ने विनय पुकारी।
खाटू में जा प्रगटो देवा। स्वीकारो भक्तों कि सेवा।
जो जीवन संग्रामी हारा। उसको देना श्याम सहारा।
लोहागर अपने स्थान। करते आये श्याम का ध्यान।
केहि विधि श्याम पधारे खाटू। वो वृतांत शब्दों में बांटू।
पूर्व नियोजित शीश है आया। प्रकृति के भी मनको भाया।

नृप खटवांग की खाटू नगरी। धर्म कर्म में रहती सगरी।

खेती हरियाली लहराये। गउएं घास चरन को जाये।
एक गाय का कर्म सुहाना। टीले पर आ दूध गिराना।
मालिक चिन्तित रहे गाय का। कौन चुराये दूध गाय का।
पीछे पीछे ग्वाला जाये। गाय जहां पर दूध गिराये।
देख देख मालिक चकराया। सबको वर्णन आय सुनाया।
शक्ति अलौकिक रहती एक। दूध से गाय करें अभिषेक।
नननारी अवलोकन घाये। दृश्य देख आश्चर्य समाये।
गाय वहीं जा दूध गिराया। ये तो अद्भूत शीश की माया।
श्याम ज्योत मंगल सुखकारी। जय जय बाबा श्याम बिहारी।
शीश विग्रह था बड़ा अनोखा। मोर मुकुट कुण्डल सब देखा।

कौन देव ये समझ न पाया। ग्वाल शीश को घेर ले आया।
करने लगा शीश की पूजा। जाग्रत देव न देखा दूजा।
नगर नरेश के सपनेउ आया। नीले घोडेउ दर्श दिखाया।
तेरे राज्य में प्रगटा राजा। श्याम नाम से बाजे बाजा।
दिव्य रूप को किया प्रणाम। आसिस देके बोले श्याम।
गऊ मालिक से शीश ले आवो। तुम मेरा मंदिर बनवावो।
नृपः चमत्कृत सो नहीं पाये। सचिवों को सब बात बताये।
चित में सबके आश्चर्य छाया। चमत्कार श्री श्याम दिखाया।
चर्चा गांव गांव में प्यारी। मंदिर की होगी तैयारी।

श्याम ज्योत मंगल सुखकारी। जय जय बाबा श्याम बिहारी।
पार्वती शंकर वहां राजे। ड्योडी पर हुनमान विराजे।
फागुन सुदि बारस का मेला। खाटू धाम लगे अलबेला।
दर्श करे लाखों नरनारी। श्याम दिवानी दुनियां सारी।
रंगरंगीले ध्वजा निशान। ऊपर मोर पंख की शान।
छत्तर नारियल मोली बांधे। कर से पकड़न डोरी बांधे।
मोरछड़ी हाथन में लावे। निरभिमान हो ध्वजा चढावें।
गोपीनाथ के दर्शन पावे। नित्य ज्योत को शीश नवावे।
बीच में बाबा का दरबार। रहे वहां पर सदा बहार।
चन्दन केशर तिलक सुहावें। अत्तर की खुशबू मन भावे।
केशरिया बागा अति सोह। मोर मुकुट कुण्डल मन मोहे।

फूलों कि माला गल साजे। मोर छड़ी मंदिर में राजे।
पेड़ा चूरमा भोग लगत है। रूप्या नारियल भेंट चढ़त है।
सुबह शाम हो महाआरती। शंख घड़ावल ध्वनि गूंजती।
शिखर बंद की शोभा प्यारी। जिसपे ध्वजा फरूकै न्यारी।।
नित्य ज्योत में अपार शक्ति। मिलती जिसको जैसी भक्ति।

श्याम ज्योत मंगल सुखकारी। जय जय बाबा श्याम बिहारी।
बाबा की भभूति जो धारी। सुखी हुए सारे संसारी।
बालक को दे यही भभूती। भूत पिशाचिनि नहीं सताती।
जो बाबा की भभूति लगावे। दुःख दारिद्र सहज मिट जावे।

श्याम ज्योत मंगल सुखकारी। जय जय बाबा श्याम बिहारी।
चरणामृत अमृत करजान। बाबा का जल पुन्य महान।
प्रातःकाल जो ये जल पीवे। बाबा की किरपा में जीवे।
बाबा का जल दोष मिटावे। त्रिविध ताप हरें सत दर्शावे।
श्याम ज्योत मंगल सुखकारी। जय जय बाबा श्याम बिहारी।
श्याम के छप्पन भोग लगाते। श्री गिरीराज धरण खुश होते।
मेवा भोग लगाय श्याम के। पूर्ण कार्य हो लग्नविवाह के।
माखन मिश्री भोग लगावे। सकल मनोरथ सिद्ध करावे।

श्याम ज्योत मंलग सुखकारी। जय जय बाबा श्याम बिहारी।
बाबा का श्रृंगार सजावो। अपना जीवन सफल बनावों।
जो बाबा को सदा संवारे। उसका जीवन श्याम संवारे।
फूलों का श्रंगार सुहाना। अत्तर सुगंधित भूल न जाना।
बबा को अतर अति प्यारा। महक रहा है ये जग सारा।
श्याम ज्योत मंगल सुखकारी। जय जय बाबा श्याम बिहारी।
परम दिव्य सिंहासन तेरा। अटल छत्र भी छटा बिखेरा।
बाबा को जो निशान चढावे। एक कार्य को पूर्ण करावे।
बाबा का संदेश बखाने। समझे जो नर चतुर सयाने।
प्रति सुदि बारस को जो आवे। जग में अधिक प्रसिद्धि पावे।
नित्य ज्योत मंगल मन लाई। विधिवत घर में पाठ कराई
पुत्र होन कर इच्छा कर ही। अवशि श्याम कृपा फल लहही।
रोग दोष अधशोक नशावे। सुत धन धान्य आयु सुख पावे।
प्रतिदिन या बारस को गावै। परम प्रशंन बाबा हो जावे।